परिवर्तन लाने के लिए सफ़र जारी है...

(ज्योत्सना, 18 साल, कदम बढ़ाते चलो, 2019) ज्योत्सना 18 साल की है और अभी बाहरवीं के परीक्षा के बाद वो नर्सिंग की पढ़ाई कर रही हैं। हालांकि उसे डॉक्टर की पढ़ाई करनी थी और बाहरवीं में उसके अंक भी 95 % के करीब आए, पर दूसरे शहर में कॉलेज मिलने के कारण उसे डॉक्टर की पढ़ाई छोड़ कर नर्सिंग की ओर ध्यान देना पड़ा। वो सपना देखती है कि वो लोगों की मदद कर सके ताकि बदलाव सबके लिए मुमकिन हो। माहमारी के समय उसने काफ़ी समय घर में बिताया, जो कि उसके लिए बहुत मुश्किल रहा पर उन समय में उसको समाज के प्रति एक नया नज़रिया मिला और उसने अपने आस-पास बहुत सारे पहलू पर सवाल उठाने शुरू किए।

ज्योत्स्ना का मानना है कि **"आज के समय में बहुत कम ऐसे जगहें है जहाँ लड़के और लड़की को समान ढंग से देखा जाए। भेदभाव ज़रूरी नहीं कि हमेशा सबको दिखाई दें, कई बार किसके निर्णयों को घर और समाज के द्वारा गंभीरता से लिया जाता है वो भी एक भेदभाव का रूप हैं।"**

ज्योत्स्ना लगातार इस कोशिश में रहती हैं कि वे जेंडर समानता को लेकर लोगों से बात कर सकें और इसके प्रति समझ बना सकें। ज्योत्स्ना का मानना हैं छोटी उम्र से ही ये चर्चा स्कूलों में शुरू हो जाए ताकि अपने अधिकारों को बच्चें जान सकें ख़ासकर की लड़कियां। उसने ये भी बताया कि "लड़कियों को इस बात को भूलना होगा कि वे त्याग के लिये बनी हैं, उन्हें अपने फैसलों की इज़्ज़त करनी होगी और उसके लिए अडिग खड़ा होना होगा"।

आगे भी ज्योत्सना इसी तरह से अपने कैरियर को लेकर समर्पित रहेंगीं और लोगों को उनके अधिकारों और कर्तव्य के बारे में जागरुक करती रहेंगी क्योंकि उनका मानना है कि कोई भी समाज तभी आगे बढ़ता है जब वो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझता है और साथ लेकर चलता हैं।

(कोमल, 20 साल, कदम बढ़ाते चलो, 2016-2018) कोमल हरियाणा के पानीपत जिले के मनाना गाँव की रहने वाली हैं। वो 2016 से 2018 तक "कदम बढ़ाते चलो" प्रोग्राम की हिस्सा रही है। कोमल एक बहुत ही बेहतरीन कबड्डी की खिलाड़ी है और उसने बहुत सारे पुरस्कार ब्लॉक लेवल पर खेल कर जीते हैं। कोमल को स्टेट लेवल पे भी खेलना था जिसके लिए उसके स्कूल ने उसके घरवालों से भी बात की थी, पर कोमल को इस बात की अनुमति नहीं मिली। कोमल ने बताया कि उसने अपने घर के विरुद्ध जा कर कई बार अपनी बात रखी पर हर बार उसकी आवाज़ को अनसुना कर दिया गया। कोमल के लगातर सवाल उठाने के वज़ह से घर के पुरषों ने उसका स्कूल से नाम कटवा दिया और घर के बाहर जाना भी बंद करवा दिया। कोमल ने बताया कि उसकी माँ उसके साथ खड़ी थी पर उनकी बात कोई सुनता ही नहीं था।

कोमल के घर के बुजुर्ग उसपर लगातार टिप्पणीयां करते और घर पर भी चुन्नी से सर ढ़कने को कहते; एक बार उसके दादाजी ने उससे कहा कि "लड़की हो लड़की ही बन कर रहो, बेवजह के सपने मत पालो" इस बात से कोमल को बहुत आहत पहुँची।

कोमल ने बताया कि उसने हमेशा ये समझा है कि कोशिश करने से नहीं रुकना चाहिए, वो लगातार प्रयास करती रहीं ताकि उसका पढ़ाई से नाता न टूटे। कोमल ने बताया कि उसके घरवालों को उसकी हिम्मत पसंद नहीं आ रही थी और उन्होंने कोमल की शादी तय कर दी।

कोमल को डर था कि उसका ससुराल कहीं उसके घर से भी बुरा निकले तो उसको और दिक्कतें होगी। उसने तय किया कि अब वो ये सब बर्दास्त नहीं करेगी और उसने छुप के अपने ससुराल वाले और जिस लड़के से उसकी शादी हो रही उससे बात की और अपने सपनों के बारे में बताए। कोमल ने खुशी से बताया कि उसकी शादी अप्रैल में है और उसके ससुराल वालों ने उससे वादा किया है कि उसका स्कूल में दाखिला भी अपैल में ही होगा। कोमल ने बताया कि **"मैं अपने कबड्डी के सपने को जाने नहीं दूंगी, मैं नहीं खेल पाई पर आगे चलकर मैं बाक़ी लड़कियों को इसके बारे में ट्रेनिंग दूंगी ताकि वे आगे बढ़ सके और जिसके भी घर से रुकावटें आएंगी मैं वहाँ जाकर बात करूँगी।"**

(रोहित, 21 साल, कदम बढ़ाते चलो, 2014) रोहित हरियाणा के सोनीपत जिले के करेवरी गांव से ताल्लुक रखता हैं। रोहित जब 14 साल का था तब ही "कदम बढ़ाते चलो" प्रोग्राम से जुड़ा था। रोहित ने बताया कि प्रोग्राम से जुड़ने के बाद उसने जेंडर समानता और महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ़ होने वाले हिंसा को लेकर काफी समझ बनाई। रोहित को उन मुद्दों ने बहुत प्रभावित किया और जब उसने आस - पास के माहौल में जेंडर असमानता के अलग पहलुओं को देखा तो उसमें बदलाव लाने की एक जोश जगी।

लॉकडाउन के समय को रोहित ने बहुत सकारात्मक ढंग से उपयोग किया। रोहित को रैप करने का बहुत शौक़ है, वो अपने गाने भी खुद लिखते है। रोहित ने यूट्यूब पर अपनी चैनल शुरू की है जिसमें वो समानता और हिंसा के मुद्दों पर रैप डालेंगे। रोहित ने बताया कि शुरुआती दौर में वो साधारण गाने ही डालेंगे क्योंकि लोग उनका सपोर्ट नहीं करेंगे। रोहित का मानना हैं कि "इन गंभीर मुद्दों के बारे में कोई जिक्र नहीं करना चाहता बस सब आँखे मूंद कर सब कुछ से बचना चाहते हैं।"

अपने चैनल पर वो हरियाणा के युवा सेलेब्रिटी कलाकारों को भी जोड़ रहै हैं ताकि मनोरंजन के साथ साथ वे उनसे इन मुद्दों पर भी बात कर सकें और लोगों तक एक बदलाव का संदेश पहुँचा सकें।

रोहित का कहना है कि **"मैं एक लड़का हूँ तभी इतनी आसानी से ये सब कर पा रहा हूँ, मेरे जगह कोई लड़की होती तो उसके लिए बहुत मुश्किल होता क्योंकि हमारा समाज ही ऐसा हैं। अगर, मैं कुछ बदलाव के लिए कर सकता हूँ तो क्यों न करूं? और मेरा मानना ये है कि हर समर्थ युवाओं को इस बदलाव की प्रक्रिया में हिस्सा लेना चाहिए।"**